

वचन

पुस्तिका 5

हमारे समय के कवि



मनोज कुमार श्रीवास्तव

मनोज कुमार श्रीवास्तव की कविताओं पर केन्द्रित



मनोज कुमार श्रीवास्तव

हिंदी साहित्य में सर्वोच्च अंकों के साथ स्नातकोत्तर उपाधि। कुछ समय तक सागर में उच्च शिक्षा में अध्यापन। सन् 1987 से भारतीय प्रशासनिक सेवा में विभिन्न महत्वपूर्ण पदों एवं उत्तरदायित्वों का निर्वहन करते हुए वर्तमान में आयुक्त भोपाल एवं नर्मदापुरम् संभाग के पद पर। अब तक पाँच कविता संग्रह—मेरी डायरी से, यादों के संदर्भ, पशुपति, स्वरांकित, कुर्आन कविताएँ तथा सात अन्य पुस्तकें—शिक्षा में संदर्भ और मूल्य, पंचशील, पहाड़ी कोरवा, वंदेमातरम् यथाकाल, व्यतीत वर्तमान और विभव, शक्ति प्रसंग व सुंदरकाण्ड : एक पुनर्पाठ (पाँच खण्ड) प्रकाशित, चर्चित एवं प्रशंसित।

व च न : पुस्तिका-५

विचार, साहित्य, कला और संस्कृति का त्रैमासिक आयोजन

➤ अगस्त, 2011

सम्पादक

प्रकाश त्रिपाठी

सलाहकार

ज्ञानरंजन

भारत भारद्वाज

रविशंकर पाण्डेय

शैलेन्द्र मणि त्रिपाठी

संयुक्त सम्पादक

नरेन्द्र पुण्डरीक

प्रबन्ध सम्पादक

अनामिका शुक्ला

सह सम्पादक

कमलेश सिंह

हितेश कुमार सिंह

आवरण सज्जा/लेजर टाइप सेटिंग

मानस कम्प्यूटर्स, इलाहाबाद

प्रकाशक

वचन, इलाहाबाद

मुद्रक

भार्गव प्रेस, इलाहाबाद

मूल्य

बीस रुपये

सम्पर्क

52 तुलारामबाग, इलाहाबाद - 211006

दूरभाष : 9415763049, 0532-2503080

E-mail : vachan07@rediffmail.com

➤ पत्रिका में प्रकाशित सामग्री के लिए लेखक जिम्मेदार

➤ पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य

➤ ISSN 0976-8297 VACHAN

हमारे समय के कवि मनोज कुमार श्रीवास्तव

चयन एवं प्रस्तुति
प्रकाश त्रिपाठी

ल च न

अन्तःकरण का आयतन

मनोज कुमार श्रीवास्तव हमारे समय के प्रतिष्ठित कवि हैं। वह न केवल कवि अपितु एक चिंतक, विचारक और सधे अनुवादक भी हैं। उनकी कविताएँ आम जनजीवन से सीधे जुड़ती हैं। उनमें मनुष्य जीवन में घट रही रोजमर्रा की घटनाएँ स्पष्ट परिलक्षित होती हैं। उनकी कविताओं में जहाँ परम्परा का निरन्तर प्रवाह देखने को मिलता है वहीं आधुनिकता का पूरा परिदृश्य दृष्टिगोचर होता है। इसलिए वह कन्फ्यूशियस की तरह भविष्य को समझने के लिए अतीत का अध्ययन आवश्यक मानते हैं। वह अपनी रचनाओं में समन्वयवादी लेखक होने का पूरा परिचय देते हैं।

उनकी लेखनी कविताओं के साथ-साथ अनुवाद, संस्कृति-विश्लेषण, शिक्षा-मूल्य, राष्ट्रीय चेतना, मनुष्य-शक्ति एवं मानव-महत्ता आदि जैसे विषयों पर भी चली। उन्होंने रामचरितमानस के सुन्दरकांड का जो विश्लेषण आमजन के समक्ष प्रस्तुत किया है वह साहित्य के इतिहास में 'मील का पत्थर' है। उनका विश्वास है कि मनुष्य में शक्ति है, भक्ति है, मनुष्य परमेश्वर का अवतार है और यदि मनुष्य मन में ठान ले, तो सारा अत्याचार समाप्त हो जाये।

मनोज कुमार श्रीवास्तव ने कुछ समय तक अध्यापन कार्य भी किया है। वह राष्ट्र की संस्कृति के चतुर चमाली हैं। उन्होंने हमेशा शिक्षा के माध्यम से संस्कारों की जड़ों में खाद दिया है और अपने श्रम से उन्हें सींच-सींचकर महाप्राण शक्तियाँ बनायी हैं। एक शिक्षक और उसके उत्तरदायित्व का पूरा निर्वहन उन्होंने किया है।

विचार कभी मनोज जी के आड़े नहीं आता, इसीलिए वे अज्ञातशत्रु रचनाकार हैं। वह पूरी मर्यादा और धैर्य के साथ अपनी बात कहते हैं। आज साहित्य कर्म जिस प्रकार से और जिसके लिए किया जाता है, वह उससे बहुत दूर हैं—

यदि तुम

किसी आत्महीनता से ग्रस्त न हो

तो मेरी कविता के मायने

जिसके निकट सबसे स्पष्ट होंगे

वो तुम हो

मनोज जी का भाव-बोध और शिल्प-दृष्टि दोनों परिपक्व हैं। वह मनुष्य जीवन में किसी को उदास नहीं, हँसते देखना चाहते हैं। वह नहीं चाहते कि कोई व्यक्ति खाली

पेट सोये। वे चाहते हैं कि उसका जीवन संसार पूरी तरह से परिपूर्ण रहे। इसीलिए अपनी कुछ कविताओं में वह भावुक हो जाते हैं, बेचैनी उन्हें घेर लेती है। एक लेखक की चिन्ता, जा देश और समाज के प्रति होनी चाहिए, उनमें पूरी तरह से समावृत्त हैं। जैनेन्द्र कुमार ने ठीक ही लिखा है—‘लेखक के लिखने का उद्देश्य अपने को सबमें बाँट देना है।’

मनोज जी ने इधर बच्चों पर कुछ कविताएँ लिखी हैं और इनमें बच्चों के मनोविज्ञान का पूरा चित्र खींचा है। एक बच्चा कैसे जन्म लेता है, कैसे बड़ा होता है, संसार को कैसे समझना चाहता है और आगे कैसे समझता है तथा वह अपनी बात लोगों के सामने संकेत में कैसे रखता है—इन सबका बड़ा सूक्ष्म विवेचन उनकी कविताओं में हमें देखने को मिलती है।

कवि मनोज कुमार श्रीवास्तव रूपात्मक काव्य भाषा का प्रयोग करते हैं। उनकी कविता की भाषा में ‘गोचर रूपों’ का विधान अधिक है। इसलिए कवि ने जाति संकेत वाले शब्दों की अपेक्षा व्यापार सूचक शब्दों का प्रयोग अधिक किया है। जैसे—‘मैंने तुम्हें उदास देखा है’ कविता में ‘उदासी’, ‘वह’ या ‘वे’ तथा ‘अबोधन’ जैसे व्यापार सूचक शब्दों का प्रयोग किया है।

आचार्य शुक्ल ने लिखा है कि नाद-सौन्दर्य से कविता की आयु बढ़ती है। निश्चित रूप से कवि की कविताएँ छन्दमुक्त होती हुई नाद-सौन्दर्य से परिपूर्ण हैं। मानसिक क्रियाओं की अभिव्यक्ति एवं अनुभूति को गुणात्मक बनाने के लिए वह आधुनिक प्रतीकों का प्रयोग करते हैं। उनकी कविता के बिम्बों में दो बातें प्रमुख हैं—चित्र और संगीत। चित्र जहाँ भाव को आकार देता है, वहीं संगीत भाव को गति देता है। चित्र देह है तो संगीत प्राण है। यही इनकी कविताओं की विशेषता है।

अपनी कविताओं में उन्होंने सामान्य बोलचाल की भाषा जैसे—वैज्ञानिक भाषा, साहित्यिक भाषा और रोजमर्रा की भाषा का प्रयोग अधिक किया है। कवि मनोज कुमार श्रीवास्तव की चुनी हुई कविताओं का यह संकलन विज्ञ पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है। हमें इस पर उनकी प्रतिक्रिया का इंतजार रहेगा।

—प्रकाश त्रिपाठी

हमारे समय के कवि

मनोज कुमार श्रीवास्तव
इक्कीस चुनी हुई कविताएँ

हवा इतनी नयी है

हवा इतनी नयी है कि
लगता ही नहीं
सदियों से बह रही है
पेड़ इस बुढ़ापे में भी
इस कदर झूमते हैं

कमाल है मौसम।

यह चाँदनी भी
नटखट बच्ची की तरह
पीछे से आकर
पहले पलकें मूँदती है
और लो, अब
कानों में कुछ कह रही है।

उदास हो जायेगी यह चाँदनी
यदि मैं इससे इसकी उमर पूँछूँ

अंधेरा कितना कोमल
और चमकीला है
कमरे में
शायद वर्षा होगी
मेरे मन का एक कोना
पहले से ही गीला है।

यदि तुम

यदि तुम

किसी आत्महीनता से ग्रस्त न हो
तो मेरी कविता के मायने
जिसके निकट सबसे स्पष्ट होंगे
वो तुम हो

तुम्हें लगेगा कि

इस विराट और विजन सृष्टि के मंच पर
तुम जैसे एक लहलहाता कुसुम हो
जिसे एक भीगी आँख देख रही है
आँख—ओस सी तुम पर रखी हुई
लेकिन तुम हो थकी हुई

अविश्वास सिक्के का एक पहलू है

तो दूसरा पहलू है थकान
तुम्हें लगता ही नहीं कि इतनी दूर रहकर
इतने अदृश्य यानी इतने निरासक्त होकर
कोई तुम्हें इतना चाह सकता है

तुम्हारे अश्रु के एकान्त में

मैं दाखिल नहीं हूँ

मैं हूँ डायरी के इस पृष्ठ पर

तुम्हें निरन्तर लिखता हुआ

कहते हैं आँख से झरती हुई यह बूँद

पारदर्शी होती है

जरा ध्यान दो, बोलो

क्या मैं हूँ नहीं

आर-पार दिखता हुआ।

रात जब ढल चुकी थी

रात जब ढल चुकी थी
एक रंगहीन तस्वीर पर अटकी हुई आँख में
रक्त उतर आया था
दिन किसी मुरझाई लता की तरह
उदास थी अंगुलियां चटकाती शाम
किसी अश्रु की तरह गहरी

चाँदनी की केशराशि के सारे फूल
टपटप झर चुके थे
वक्त के निर्दय गर्भ से निकलकर
लावा गिर रहा था एक चौकोर आईने में
कितने रोज संजोकर सीने में
शय्या पर लेटा सूरज
दम तोड़ रहा था

वो जुझारूपन
खत्म हो चुका था जो
संवेदना की फटी हुई आस्तीन के तन्तुओं को
एक-एक कर जोड़ रहा था

किसी भी पौध को
पनपने के लिए प्रकाश
जरूरी होता है
अब जबकि अंधी निगाहों की
खोज कर चुकी है महाप्रयाण
नकली सिक्कों की तरह
प्रश्न फिर
बंजर आँखों में उगे हैं।

खंडहरों में आतंकित
फुसफुसाहट है

बुझी नहीं है
नरभक्षी दांतों की चमक
जबड़ों में वैसी ही कसावट है
फन पटक रही है सर्पिणी
खंजरों के आसपास वैसी ही
मंत्रपूत सजावट है

खून से भीगी दिशाओं में
घूमते हैं लाखों भोले स्वप्न
घायल आस्थाएं
सिसकती शिरायें
कि महाकाल के रथ के नीचे
कुचला हुआ कालजयी कुसुम है
धूप का एक सौम्य टुकड़ा
गुम है

डबडबायी आत्मीयता कब तक
अंधेरे में खोजेगी उसे
विस्मृति के तहखाने में इसको भी
धकेल दिया जाये
ऐसा करने से पहले मृत्यु भी
सौ सौ बार सोचेगी उसे

इसी दम पर मैं कहता हूँ
प्रकाश बुझता नहीं है
आँसुओं में नहायी हुई आस्था के
सीने की धड़कन बढ़ जाती है
वेद और बाईबिल
कुरान और जेंदावेस्ता के पृष्ठ

फड़फड़ाने लगते हैं

काल एक बार फिर हार जाता है
क्योंकि वह आदमी एक न था
काफिला था
महक का एक लम्बा सिलसिला था
जो समय के पार जाता है।

हमारे तुम्हारे बीच

हमारे तुम्हारे बीच
दौड़ती हुई तेज रफ्तार सड़क है
सर्प के दंश से जलती हुई आस्तीन-सी
सड़क-तेजाब की बिखरी लकीर
जिसका एक छोर जाकर छूता है
गर्विली इमारत के तहखाने को
जहाँ कुछ फुसफुसाहटें नाशता कर रही हैं और
नशे में जहाँ मोक्ष पा लिया है

हमारे तुम्हारे बीच
कान की बूंदों को छूती हुई लाली है
जो बिल्कुल उस समय
याद आती है जब
उफ़क पर सरेआम एक कत्ल होता है
और
वक्त की संदिग्धचरित्र पुलिस
उस पर अंधेरे की
परत-दर-परत जमाती जाती है

हमारे तुम्हारे बीच
चटके हुए दर्पणों सी लंगड़ी आस्थाएँ
पसीना पोछती हैं
हमारे तुम्हारे बीच
आसमान है—जो सूँघता है
जमीन है—जो सोचती है।

नदी जब इतनी युवा-युवा होकर

नदी जब इतनी युवा-युवा होकर
पहाड़ की सीढ़ियां उतरती है तो
जैसे लगता है कि
जितना वो नीचे गई है
उतना ही उसने आकाश के किसी
अंग को छुआ है
वैसे ही कल मुझे चाँदनी को
अपने घर की सीढ़ियों पर
उतरते और बिखरते हुए देखकर लगा कि
गति हमेशा दो-आयामी होती है
और अगर हम इसको महसूस
न कर पाते हैं
एक अधूरे सुख
या एक अधूरे दुख की खातिर
तो इसलिए कि हमारी दृष्टि में
एक मौलिक खामी होती है

कल मैंने चाँदनी को जब
सीढ़ियों सीढ़ियों देखा
तो सोचा कि
इसे तो संसार ने
इसकी पीढ़ियों देखा
और किसी दस्तावेज़ में इसकी
वंशावली दर्ज नहीं।

यहाँ तक कि इसके चेहरे पर भी
इसके व्यतीत का कोई उल्लेख नहीं
तब न जाने क्यों मुझे

सारा इतिहास कूड़ा लगने लगा।

लौटकर कमरे में आया .
टाई की 'नाट' ढीली की
और यही वक्त था दोस्त
जब मुझे आईना
बूढ़ा लगने लगा।

क्या ऐसा नहीं होता

क्या ऐसा नहीं होता
बहुत शिदत के साथ
मन में पुकारा गया एक नाम
वहाँ गूँज पैदा करता है
जहाँ से वह जाना गया
एक रहस्यमय गूँज कि
कोई हल्के से पुकार रहा हो
चौककर उठ पड़ी हो तुम
और धीरे-धीरे तुम्हारे
जेहन में इस 'कोई' की तस्वीर
साफ हो चली हो
और फिर तुम मुस्करा दी हो
बिस्तर पर तुम्हारी
मुस्कान बिखारती हो
और दूसरी करवट लेकर
एक संतोष भरी नींद के किनारे
तुम पहुंचती हो
नींद जो एक नदी की तरह
बह निकलती है ऐसी हालत में।

आधा केशों का अँधेरा
आधी चांदनी मुस्कान की।
तुम्हारी नींद कृतज्ञ है मेरे
एक सम्पूर्ण आह्वान की।

मैंने तुम्हें उदास देखा है

मैंने तुम्हें उदास देखा है

मेरे हाथों में
तुम्हारी उदासी की एक रेखा है
उसी दिन से खिंची हुई

यह कैसा क्षण
जिन्दगी में आता है
अपने ही लोग
वह या 'वे' हो जाते हैं और एक
बहुत कम बतियाया हुआ उदास-सा-चेहरा
सोच के एकान्त में
'तुम' बनता चला जाता है।
इतनी जल्द कि
मेरी मुट्ठी विवशता में भिंची हुई
मेरी ध्रुव हो चुकी नियति में
उतरा हुआ खून
किसी की मांग का सिंदूर
किसी की आस का कुमकुम
बनता चला जाता है

जब एक कली का अबोधपन
चटककर
कुसुम बनता चला जाता है तो—
वह एक बहुत मासूम सुबह होती है
ओस जितनी नहीं और मासूम।

लेकिन जब कुछ ऐसा ही

मेरे साथ गुजरता है तो क्यों
वह एक वयस्क आंसू की
वजह होती है
वयस्क आंसू यानी वह आंसू
जिसमें दरारों की जगह होती है

मैं अपने हाथों को देखता हूँ जिनमें
तुम्हारी उदासी की नदी है
और सोचता हूँ—
इस नदी की तो नहीं
पर मेरे हाथों की एक सतह होती है।

एक रोटी देखता हूँ

एक रोटी देखना हूँ
और कितने चेहरे याद आते हैं
रोटी का गीत
गाने के लिए मुझे फेफड़ों में
हवा की दरकार है
रोटी का गीत गाने के लिए
महाप्राणों की भरमार है
रोटी के गीत से गीत
बनता है, आटा नहीं।
रोटी का गीत इसी
बात पर खुश है कि उसने
दर्द को हथियाया है
ग्रास को बांटा नहीं

रोटी का गीत-
पिंगल शास्त्र में इस नाम का
कोई छंद नहीं
रोटी का दोहा बनाकर
किसे दुहोगे तुम? तुम अकलमंद नहीं।
इससे तुम्हारी मर्यादा
छोटी भी हो सकती है
हर गोल चीज चांद नहीं होती।
रोटी भी हो सकती है।

एक रोटी देखता हूँ और
चाँद से चेहरे याद आते हैं।

मेरी आँख भीगने के पहले

मेरी आँख भीगने के पहले ही
बाहर बरसात हो गयी है।
बिजलियाँ चमकती हैं कि
उन्हें भी कोई खोज है।
अभी दूर दूर तक
तुम्हारे कदमों की चाप नहीं हैं
हालाँकि आधी से ज्यादा रात
हो गयी है, तुम जो अदृश्य हो

इस रात मेरे
हाथों से छूटकर ओझल हो गया
सरल स्निग्ध मन का
पहला और आखिरी रहस्य हो

क्यों ये ख्याल सा जागता है कि
इतनी परायी होते हुए भी
मेरी परवाह किये बिना
चली आने वाली तुम्हारी याद
पाप नहीं है

यह एक विचित्र सच है
इतना विचित्र कि
माया के करीब लगता है
तुम्हें जब सोचता हूँ तो
लगता नहीं कि कोई अन्याय कर रहा हूँ
तुम्हारी स्मृति में सिर्फ तुम हो
ग्लानि नहीं है
पश्चाताप नहीं है

ऐसा नहीं है कि मैं डर रहा हूँ।
यह जानकर ही आदमी निर्भिक होता है कि प्यार
जोड़-घटाना गुणा-भाग लाभ-हानि नहीं है
वह जो होता है ठीक होता है
ऐसा सोचती हुई एक बूंद
पलकों से दुरकर चुपके से
गालों पर आ जमती है
बारिश बाहर थमती है।

मैं तुम्हारे कमरे से चुपचाप निकल गया

मैं तुम्हारे कमरे से
चुपचाप निकल गया
तुम सो रही थीं
पलकें तुम्हारी
आंखों पर बिखरी पड़ी थीं और
केश सीने पर।

शायद स्वप्न देख रही थी तुम
बंद पलकों में गुम हो गयी थी
पुतलियों की ज्योति

जब मैं था उतरते हुए पहले जीने पर
तुम सो रही थीं
मैं तुम्हारे कमरे से चुपचाप
निकल गया
एक अपराध सा महसूस करते हुए
मैंने इधर उधर ताका
गैलरी खाली पड़ी थी, किन्तु
मुझे लगा कि एक छाया
जो बहुत देर से खड़ी थी
अभी-अभी मोड़ पर लोप हुई है।

उस समाज में

उस समाज में
सब हाथों में किला लिए घूम रहे हैं
सबके सीने में
एक सुनहरा खंजर गड़ा है जिसे
दूसरे चूम रहे हैं
तुलसी के पौधे
अंकुरित होते ही
बबूल से हाथ मिलाते हैं
धूप सेंकता है घड़ियाल
और नकाब बस दांत दिखाते हैं

तुम सोचते हो शायद
यह किसी निजी अपमान की प्रतिक्रिया है
तुम सोचते हो और सोचकर
तुमने नार्सिसस को तालाब-किनारे झुके
देखा है
किन्तु तुमने देखा नहीं
सागर झलकता बूंद में

तुम विधि को जानते हो
वे उसे प्रपंच कहते हैं
उसके दोनों अर्थों में

हालांकि उन्हें अर्थों की तलाश नहीं
वे संदर्भों को ही रंगमंच
कहते हैं
मैंने वहाँ कठपुतलियों के खेल देखे हैं
किन्तु वे सोचते हैं जन्म लेते हैं

उनकी नाभि-रज्जु
कट चुकी हैं
वे मुक्त हैं

सिर्फ तुम और मैं ही अभियुक्त हैं।

कच्ची हवा

कच्ची हवा इस तरह से
हमें छूती है—जैसे हम
किसी दूसरे आसमान से घिरे हों
और किसी अन्य पदार्थ की ही
हमारी त्वचा है
हम जैसे
अंतरिक्ष के दूसरे सिरे हों
हमें किसी पराये ईश्वर ने रचा है
इस भांति हमें देखती हैं पेड़ों की विनम्र आँखें
मेड़ खेतों की, झोपड़ी के दरवाजे
और बैलों की प्रकटतः उदासीन आँखें
किसान और उनकी लड़कियों का कौतूहल
नज़र जैसे कोई कंकड़ है
हम जैसे कोई जल

हमारे निकट आ के अवतार लेते हुए शब्द
बोल—जो ढोल या कोरस में निकलते हैं
बोल—हमें देखकर अपनी शक्लो-सूरत बदलते हैं
बोल—जो बताते हैं इरादों की कुल जमा आयु
उनका हमसे कुछ भिन्न ही है तापमान
भिन्न है जलवायु
यों सूघते हैं हमें फूलों के ढेर, खेत की
रक्षा करते हुए कुत्ते और लोगों की गुप्तचर जिज्ञासा
(जैसे हमारे पास कोई टोना है, जादू है)
जैसे हमारे पदचिन्हों से जनमती है
एक नई पिपासा
प्यास कि जिसमें ठेठ
ऊष्ण कटिबंधीय खुशबू है

और सुनते हैं हमें
किताब में सिर्फ सर झुकाये स्कूल के बच्चे
घाटियों की अन्त गुंजित गहराईयां
फसलें धरती की सतह पर कान लगा झुकती हुई
जैसे कि हम हों झाड़ी के पीछे
गुंथी परछाइयां या आखिरी शय्या की
सांसें-थकी और चुकती हुई

यदि है मुझे कुछ तो
बस यही क्रोध है
इन्हें क्यों हमारे दृष्टा होने का
इतना बोध है।

मैंने जो पाया है

मैंने जो पाया है
उस सब में तेरी ही छाया है
उपहार और अपमान
उल्लास और उदासी
सब तेरे किनारे पाए थे
कभी तेरे किनारे होने पर
कभी तेरा किनारा करने पर

जितनी भी प्राप्ति है
उसमें तेरी ही व्याप्ति है,
मेरे लिए जितनी तू नदी है
उतना ही आकाश

लेकिन सिर्फ
यह नदी ही मेरी नहीं हुई
सिर्फ यह आकाश ही
मेरा नहीं
बस इनके बीच की वाष्प
जो मेरे कपोलों पर लुढ़कती है
और यह भी कि
ये जो बाद का पराया सा ताप होता है
यह भी
एक तरह का पाप होता है
और तब चेतना
एक देह बनती है
देह जो शोलों पर लुढ़कती है
जीवन इन शोलों का शाप होता है।

एक बहुत सी रात हवा की शीतल लहरों के बीच
चांदनी के ढलान पर
मेरे इर्द गिर्द एक से अधिक परछाइयां हैं
जिनमें से किसी को मैं रौंद नहीं सकता।

तेरी आँखों में पानी है
तेरी आँखें बादल हैं
आसमान में यहाँ से वहाँ आंदोलित
और मैं इधर बिजली की तरह
तड़पता हूँ सिर्फ इसलिए कि उनमें
बिजली की तरह कौंध नहीं सकता।

जो सदी होती है

जो सदी होती है
उसके बीत जाने के बाद
भीगे भीगे पांवों से चलती हुई
एक नदी होती है
मन्थर गंभीर प्रवाह से
किसी को न छलती हुई
एक नदी
एक विशाल आँख में ढलती हुई

मोक्ष उसी को
जिसने इस नदी के कण को
चुल्लू से पी लिया है
यह बहुत सोचती हुई नदी
यह बहुत तन्मय और अनन्य नदी
जो इसका अध्ययन कर सका
वही सही मायने में जी लिया है

हर विचार स्वेद की एक बूंद की तरह
टपकता है
यों यह नदी किसी
स्रोत से नहीं निकली
यह स्वतः समृद्ध है

यह जितना सोचती है
उतनी युवा है
मनुष्य जितना सोचता है
उतना वृद्ध है।

दुख की रात

मुसलसल याद आता है—
तुम्हारा वो रूठकर ठहरा हुआ चेहरा
जिसके बारे में मुझे
अभी तक शक है कि वह
रूठना नहीं था (हमारे रिश्ते इतने सघन कब हुए)
कि वह अभिनय की परछाई-सा
नहीं था कहीं झलका हुआ
कि वह सच्चा दुख था
तुम्हारे न चाहते हुए भी
मेरी किसी असावधानी से
तुम पर छलका हुआ

अभी जब हवा
मेरे कानों को छूकर मुड़ी
भरम तुम्हारे आंचल का हुआ

मैं वंचित हूँ
यह कैसी वंचना है जो
मेरी नींद में हौले से
मुझे टेर गई

इस तारीख के आखिरी पलों में
ईश्वर से सिर्फ
उस उदासी का सबब
मांग रहा हूँ

तुम्हारे दुख की रात है
मैं जाग रहा हूँ।

अभी भी मैं तुम्हारा

अभी मैं
तुम्हारा बहुत ऋणी हूँ

अभी भी मैं तुमसे
लेता हूँ
सुबह के वक्त
मेरे कमरे का स्थिर और संयत मौन
दरवाजे पर कोई आहट
और यह आस से उत्साहित आदत कि
पूछना कौन

अभी मैं तुमसे लेता हूँ
किताबों में खुद को झोंक देने की झक

अभी भी मैं तुमसे लेता हूँ
सूरज के परास्त हुए चेहरे के प्रति सहानुभूति
बहुत सारे गीत और उनकी गति
कविता लिख चुकने के बाद
मेरे चेहरे पर अंकित होती हुई
यति, पूर्ण विराम
यह सब मैं तुमसे लेता हूँ

अभी तुमसे लेता हूँ
वह घायल स्मित जो
सीने में गुलाब के फूल के चुभने पर
होती है

अभी भी तुमसे लेता हूँ

वह ईर्ष्या जो एक
बदली में चाँद के छुपने पर
होती है

तुझे नहीं मालूम
अभी मुझे तुझसे
इन्तकाम लेना है
रात के इस एकान्त में
पलकें झपकने के पहले
एक पराया हो चुका नाम
लेना है

वह नाम कि जिसके बिना
मेरी नींद का सबेरा न हो

तू सोचती है
काश वो
तेरा न हो
तेरा न हो।

कल

स्वयं को स्थगित करते हुए
मैंने एक कायरता को जीवित रखा

कल मैं फिर पैदा होऊँगा
छुऊँगा
घास की कोमल सतह को

रेशम का यह कीड़ा जो
आज मेरी सतह को बुन रहा है
हो सकता है
अभी इसकी तरह
मेरी व्यस्तता की कोई वजह हो

आकाश संभावना है
लेकिन यह धरती
तितलियों की मासूम
उम्मीदों का उठावना है

मैं इस धरती को चूमता हूँ
इसमें दफ़न हूँ
मेरी मुझसे बड़ी परछाइयाँ
हो सकता है कल
इसके दिल में भी
मेरी कोई जगह हो

कल मैं फिर पैदा होऊँगा
छुऊँगा
घास की कोमल सतह को।

यह ईश्वर ही है

यह ईश्वर ही है
जो आरम्भ करता है
सृजन की प्रक्रिया
और करता है उसका पुनरावर्तन
और लौटा जाता है अपने में हम सबको

उसके चिह्नों में यह भी
कि उसने तुमको रचा
धूलि से और तब तुम होकर भरपूर
बिखर गए और फैल गए
यहाँ वहाँ और दूर-दूर

उसके चिह्नों में यह भी कि उसने तुम्हारा सहचर
इन सबके बीच दिया
तुम शान्ति से संपन्न हो
इस हेतु तुम्हारे हृदयों में
दया और आकर्षण
खींच दिया

उसके चिह्नों में यह भी
कि आकाश और अदिति
और तुम्हारी सभी भाषाओं के प्रकारों की निर्मिति
और तुम्हारे सभी रंगों का यह भान
कि जो जानते हैं अक्सर
वे जानते हैं उनमें उसके निशान
(जो नहीं जानते वे झगड़ते होंगे भाषा और रंग के भेद पर)

उसके चिह्नों में यह भी

यह महामोहा निद्रा जो तुम लेते हो
रात्रि में और दिन में
और उसकी विपुलता के बीच
यह तुम्हारी गवेषणा
सच इन्हीं में तो चिह्न
उनके लिए जो कान लगाकर सुनते हैं

और उसके चिह्नों में
वह तुम्हें दिखाता है यह विद्युल्लता भय की और आशा की
तुम्हें अभ्र से भेजते हुए वृष्टि
सस्पन्द करता है इस पृथ्वी को जब यह मर जाती है
भरता है उर्वरता और समृद्धि
सच ही नहीं सब में प्रतीक है
उनके लिए जो विज्ञ है
और उसके चिह्नों में यह
कि महाशून्य और मेदिनी
उसकी आज्ञा पर ठहरे हुए
कि जब वह तुम्हें बुलाता है
सिर्फ एक आह्वान पर
तुम सीधे चले आते हो धरती से

उसी से सम्बद्ध हैं
उडुपथ और ऊर्वी की प्रत्येक वस्तु
सभी उसी के प्रति अत्यन्त निष्ठा से आज्ञाकारी
(तुम ही उल्लंघन करते हुए नैसर्गिक दिव्यता का)
यह ईश्वर ही है
जो आरम्भ करता है
सृजन की प्रक्रिया
और करता है उसका पुनरावर्तन

सबसे सरल है यह उसके लिए।

यह नहीं सोचना

यह नहीं सोचना कि ईश्वर
उनके कर्मों को नहीं सुनेगा
जो पाप में रत हैं
उसने उन्हें उस दिन के विरुद्ध विश्राम दिया है
जब उनकी आँखें
आतंक में जड़ हो जाएँगी

वे भागते दिखेंगे
अपनी बाहर निकली हुई गरदन के साथ
ऊपर देखने के लिए सिर उठाए हुए
उनकी दृष्टि उन तक लौटने से इंकार करती हुई
और उनके हृदयों में भयावह निर्वात होगा

चेतावनी है मनुष्य मात्र के लिए
उस दिन के लिए जब क्रोध उन तक पहुँचेगा
तब यही पापी कहेंगे क्षमा कर, प्रभु
कुछ देर के लिए सही, क्षमा कर
हम तेरे आह्वान का उत्तर देंगे
तेरे शास्ताओं का अनुसरण करेंगे
कि पहले बोले होते तो आकाश के शिखर से
क्यों पतन होता
कि उन लोगों के आवास में रहे क्यों
जिन्होंने अपनी आत्मा की त्रुटि कारित की
जिनका अपवित्र मन होता

अपनी योजनाएँ उन्होंने यों तो काफ़ी
ताक़त से भारत की
लेकिन सब रही ईश्वर की दृष्टि में

हालाँकि योजनाएँ इतनी शक्तिशाली
कि हिला सकती थीं पर्वतों को

मत सोचो कि ईश्वर फिरेगा
अपनी शास्ताओं को दिए वचन से
यह अपनी शक्ति में संप्रभु प्रभु है
प्रतिशोध का देवता
(इसके रहते) एक दिन एक दूसरी वसुंधरा होगी
एक दूसरा अन्तरिक्ष होगा।

द्वैत-राग

सबसे करुणावान्
उसी ने दी पवित्र पुस्तक

उसी ने मनुष्य को रचा, सिखाई उसे श्रीभारती
(उसी से बाह्य प्रकृति के प्रतीक)
सूर्य और चन्द्र करते हैं परिभ्रमण ठीक गणना की गई ग्रह कक्षा में

औषधियाँ
और वृक्ष
दोनों ही झुकते हैं प्रार्थना में

उसी ने अन्तरिक्ष को (उठती हुई) बुलन्दी दी
और स्थापित की एक
तुला
(कि एक अभूतपूर्व गणितीय संतुलन और व्यवस्था में कायम रहा है आकाश)
(यह एक राशि है इंगित)
ताकि तुम व्यतिक्रम न करो इस संतुलन का
(पालन करो मध्यमा प्रतिपदा)

अपनी तुला में करो न्याय का मूर्द्धाभिषेक
कमी न आए एक
निष्पक्षता में (अति सर्वत्र वर्जयेत्)
उसी ने पृथ्वी को बिछाया है
प्राणियों के हित
(जिसने दी अन्तरिक्ष को बुलन्दी)

जिसमें पेड़ और फल
खजूर के और फसल

(अन्न मनुष्य के लिए)
पत्ते और डंठल
चारा (पशुओं के वास्ते)
(पोषक और सम्बर्धक वस्तुएँ)
और मधुर सौरभ से रची-बसी चीज़ें हैं।

छोटे बच्चों पर छोटी कविताएँ

एक

वह जब अँधेरे कमरे में आता है
अपनी एक अंगुली से मासूम
इशारा करता है
प्रकाश के स्रोत की तरफ
निःशब्द

दुःख है कि उसके अपने ही
नहीं देख पाते
उजाला

कि आलोक शब्द नहीं
संकेत है।

दो

वह जब भी
गोदी में चढ़कर
प्रवेश करेगा
किसी कक्ष में
तो देखेगा कि
कहाँ है उजाले की जगह
वह जगह एक से ज्यादा भी हो सकती है
और वह रोकेगा नहीं
तब तक
अपनी अँगुली के इशारे करना

जब तक रौशन नहीं हो जाती

उजाले की
सारी जगहें।

तीन

जब वह प्रकाश
की तरफ
इंगित करता है
अपनी नन्हीं नन्हीं उँगलियों से

तो और सब तो
देखते हैं
प्रकाश को

उसकी माँ देखती है
उंगलियों को

उजाले सबके लिए
एक ही जगह पर नहीं।

चार

अभी उसके
बोलने की भाषा
इशारे में है

अभी वह
इश्वर है
या
कवि।

पाँच

अभी उस पर
ईश्वर के फिंगरप्रिंट्स हैं

और इसलिए अभी
उसकी उंगलियों में
ईश्वर
बोलता है

वह नहीं बोलता

छः

ठीक है कि
अभी उसे आता नहीं
इस धरती पर
चलना
दौड़ना
बोलना

लेकिन आपको भी कहाँ पता
उस दुनिया की बातें
जो उसकी
फिंगरटिप्स पर हैं।

सात

ठीक है कि
एक उँगली से
नहीं चुने जा सकते मोती

नहीं उठाए जा सकते हैं पत्थर
नहीं बीनी जा सकती है सर की जूँ भी
नहीं धोया जा सकता है अपना चेहरा

लेकिन देखिए तो
उसके सभी काम फ़िलवक्त
एक उँगली से सधते हैं।

आठ

अभी उसकी उँगली पर
कोई
'रिंग' नहीं है

अभी उसकी
'रिंग' में
सारा जगत् है।

नौ

उसकी एक उँगली ने
आपको आश्चर्य होता है
कितने सारे अर्थों का
भार उठाया हुआ है

आपको तब आश्चर्य नहीं हुआ
जब आप सुन रहे थे
गोवर्धन को एक उंगली पर उठाए
गिरिधर की कथा।



आयतों में दर्ज मानवता के इबारत

नूरुद्दीन मुहम्मद परवेज

अब तक कविता का एक बड़ा सरोकार राजनीति और समाज के रिशतों से रहा है पर एक पवित्र ग्रंथ कुर्आन शरीफ के बहाने समुदायों और संप्रदायों के बीच बढ़ी दूरियों एवं हजारों साल पुराने अनुभव की प्रतिध्वनियों को पकड़ने की विनम्र एवं उदार कोशिश कवि मनोज कुमार श्रीवास्तव ने की है। उनका काव्य संग्रह 'कुर्आन कविताएँ' कुर्आन की आयतों का महज काव्यानुवाद होने के बजाय उसकी आयतों में पसरी सांस्कृतिक विमर्श की एक खोज है। यह वो किताब (कुर्आन शरीफ) है जो आपसे, आपकी भाषा में संवाद करना चाहती है और इस बहाने आध्यात्मिकता के दिव्य लोक में जाकर अनादि आलोक से साक्षात्कार कराती है। इसमें कोई गूढ़ संकेत खोजने की कोशिश कतई नहीं की गई, बल्कि भावना का एक काँचा तांतण (कच्चा धागा) जीव और ब्रह्म को जोड़ जरूर देता है।

संघर्षों से छलनी हुए इस देश में 'इस्लाम-मुसलमान-कुर्आन' पर काफी कुछ लिखा गया समर्थन में भी और विरोध में भी, केवल राजनैतिक लाभों के लिए। जिससे इसकी धार्मिक भावना खो जाती है। ऐसे में 'मनोज' ने इस्लाम की मूल आत्मा— 'कुर्आन शरीफ' के आयतों में अभिव्यक्ति सांस्कृतिक-अध्यात्मिक दर्शन को व्याख्यायित किया है। संग्रह की पहली कविता 'उस इश्वर के नाम पर' कुर्आन शरीफ के पहले अध्याय की एक आयत (मंत्र) है— 'सूर: फातिहा:' जो मुसलमानों में हर अवसर पर बोला जाता है कि "अल्लाह के नाम से आरंभ करता हूँ...." का महज काव्यानुवाद न होकर उसकी समकालीन तार्किक व्याख्या है— 'प्रशस्ति हो उस विश्वभर की/जो भुवनों का पोषक और प्रणिधान है।'.... यह तुम्हारी प्रार्थना की भूमिका है— परिभाषा नहीं/उष्मा है अनुभूति की.../ अब यह तो नहीं हो सकता कि हम करुणावान भगवान को पोषक, प्रणिधान कह कर पुकारते रहें और शोषण भी करते जायें। हम यदि दूसरों के दुःख पर दया न करें, ऊँच-नीच का भेद करें, तो ईश्वर की दया किस तरह पायेंगे? सबको समभाव से प्यार करना, सबकी सेवा करना ही वास्तविक धर्म है, परमधर्म है, बाकी सब गौण है। उपनिषदों में वर्णित 'अग्ने नय सुपथा राये' की प्रतिध्वनि 'तू हमें सीधा रास्ता दिखा' में दिखती है— 'तू ही पथ है, तू ही प्रदर्शक/तेरे सिवा कौन हमारा ध्रुवतारा है/ तू नहीं तो मनुष्य सिर्फ एक दिशाहारा है।'।

लगभग पंद्रह कविताओं के इस संग्रह में कवि की संवेदना का धरातल कुर्आन

शरीफ में आये आयतों में दर्ज मानवता के सदेशों को जब-जब स्पर्श करता है तो आज के बाहरी और संशय-समय की दबावों की पड़ताल के साथ पोर-पोर में छिपा अंजोर बग बगा उठता है। यह कवि के रचाव की अपनी विशेषता है, कि अनादि आलोक और जीव-सृष्टि के रहस्य को जानने के लिए संग्रहको एकाधिक बार पढ़ने को उकसाता है और हर बार एक नई ताजी महक का विस्फोट करता है।

जहाँ-जहाँ समय है, जहाँ-जहाँ कुर्आन शरीफ से निकले धर्म से आँखें मिलाता वर्तमान है, वहाँ वहाँ 'मनोज' समस्त जगत् को प्रेम के सूत्र में बाँधने वाली कविताएँ रच लेते हैं— तुम शांति से सम्पन्न हो/इस हेतु तुम्हारे हृदयों में/दया और आकर्षण/ खींच दिया...। दरअसल यह कविता कवि के काव्य मर्म को समझने की कुंजी है। यह कविता बताती है कि कवि आयतों में अन्तर्निहित संदेशों के बहुत ही बारीक अध्येता हैं। कवि ने स्वयं स्वीकारा है कि 'आयतों के ट्रांसलेशन की जगह नबाकोव का शब्द ट्रांसपोजीशन इसे ज्यादा व्याख्यायित करता है। यह हमारे अपने सांस्कृतिक अनुवाद (कल्चरल रिसोर्सेस) का हिस्सा है, कि यह कहीं पूरी मनुष्यता के जातीय अवचेतन का अंग है, कि यदि वह अनुभव सचमुच ही एक आध्यात्मिक अनुभव है तो यह अधि-आत्मा है, सेल्फ या सेल्फहुड से ज्यादा कहीं हम सब में बजता है। 'किन-किन उपहारों को' कविता में ईश्वर - जीव और प्रकृति के राग-रंग की कई अनुभव वीथियाँ हैं जो समकालीनता के निकर्ष पर अपने रचनात्मक वैभव के साथ हमें बहुत गहरे प्रभावित करती हैं— किन-किन/उपहारों को अपने प्रभु के/तुम झुठलाओगे/ कि जिसने रचा मनुष्य को/खनखनाती माटी से, कंकर से/कुम्हार के बर्तनों की तरह/ कि जिसने रची अदृश्य शक्तियाँ/धूम्ररहित वैश्वानर से/स्वामी/दो पूरब और स्वामी दो पश्चिमों का/कि जिससे जारी हुई/दो राशियाँ/बहते पानी की/संगमित होती हुई...।" प्रकृति के साथ इश्वर और जीव के नाभिनालबद्ध संबंधों की तार्किक समसामयिक व्याख्या कर देने की कवि की यह हुनरमंदी उसकी भाषाई दक्षता और सूझबूझ पर उसकी अचूक पकड़ का प्रमाण है।

मनोज का ट्रांसपोजिशनिक व्यक्तित्व की ऊँचाई अपने चरम पर है कुर्आन में प्रयुक्त 'क्राफिर' शब्द को उन्होंने 'संशयात्मा' के रूप में अनुवाद कर विधर्मि या नफरत के शब्द से परिपूर्ण अर्थ के आवरण को नोंच डाला— संशयात्मा/एक विस्तृत गहन सिंधु/के/ ऐसे अतल तय की तरह/जिसकी उर्मियों पर उर्मियाँ। इस अंधकार व गहराती हुई/जिसके धृंग पर गहरे काले मेघ/कि यदि आदमी हाथ की न बढाए/तो कुछ न सके देख..../कि परमात्मन/जिसे आलोक नहीं देता/उसके लिए कहीं भी नहीं है/ आलोक.....।" आध्यात्मिकता की गहरी सूझ रखने वाले कवियों की फेहरिस्त में मनोज की पहचान अलग है। यह पहचान उनकी कविताओं की भाषिक सजगता और तार्किक स्वच्छन्दता से प्राप्त होती है। वे स्वयं स्वीकार करते हैं कि कुर्आन शरीफ के

शब्द बोले गये शब्द हैं, वे लिखित शब्द नहीं हैं— वे श्रव्य अधिक हैं, उनकी वाचिकता ने उसमें एक अलग शक्ति विकसित की है। किसी अनुवाद का दम नहीं कि उस शक्ति का पासंग भर कहीं उसमें छलक जाये। विगत के व्यय की जगह, ऐसा पवित्र ग्रंथ यदि नए सिरे से छुआ जाये, तो निजी अर्थ और अभिप्राय का एक आकाश खुलता है। नब आपको लगता है कि इन शब्दों के नीचे भी एक श्वास है—प्राण-सरस्वती जो लगातार बह रही है अतल में—‘यह ईश्वर का प्रकाश/ और प्रतिष्ठा है/ कि वे सभी चीजें/उसने द्वन्द्व में रची हैं.../और यह प्रभाकर पुनर्नवा/एक सुनिश्चित अवधि के लिए/एक संग्रय हेतु/गतिमान अपने परिपथ पर विशेष.....।’ ‘कुर्आनी कविताओं का एकमात्र उद्देश्य कुर्आन शरीफ के श्रव्य-वाचिकता के नीचे श्वासिक शब्दों के द्वारा दिलों को जोड़ने का रहा है। यह कैसे हो सकता है कि हम करुणावान भगवान का नाम लिया करें और शोषण भी करते जायें। जब हम भगवान को दयावान, कृपालु कहकर पुकारते हैं, तो हम कैसे निष्ठुर बन सकते हैं? हम यदि दूसरों के दुःख पर दया न करें, ऊँच नीच का भेद करें, तो ईश्वर की दया किस तरह पायेंगे? सबका प्यार करना, सेवा करना ही ईश्वर धर्म है और दिलों में प्रेम का रुहानी जज्बा पैदा करना ही इसका संदेश है। इस कविता-संग्रह में जितनी भी कविताएं हैं उन सभी में आनंद की धारा बह रही है और यह सारी सृष्टि, सूरज, चाँद, सब सितारे, सब पहाड़, सब पत्थर, सबके सब भगवान का नाम ले रहे हैं; सब अपना संबंध भगवान के साथ जोड़ रहे हैं और सिजदा कर रहे हैं। इन सब से नफरत, ईर्ष्या, क्रोध की जो खाई पटती है उससे मानवता, विश्व-बंधुता मजबूत होती है।

अनेक प्रबुद्ध लेखकों का मत है कि पिछले लम्बे समय से कविता में एक खतरनाक एकरूपता पैठ गई है। कविता में शायद यह व्याधि साहित्येत्तर आकर्षणों से जुड़ने और जीवन की जटिलता को न भेद पाने तथा अभुवों के उत्तरोत्तर सीमित हो जाने से पैदा हुई है। इसके विपरित मनोज की यह विशिष्टता है कि कुर्आन के आयतों में अन्तर्निहित विश्व-बंधुत्व-प्रेम को कुशल विवेक से व्याख्यायित कर एक नया प्रतिमान गढ़ा है। सरलता और बोध के खरेपन से व्याख्यायित आयतों का काव्यरूप जटिलता के विरुद्ध सरलता के कई द्वार खोलते हुए आध्यात्मिक काव्य-सौंदर्य में लिपटे विश्व-बंधुत्व-प्रेम के सौंदर्य की पुर्नप्रतिष्ठा का अभियान मान कर पढ़ा जा सकता है।



अनामिका प्रकाशन समूह की श्रेष्ठ पुस्तकें

अनामिका प्रकाशन, वचन पब्लिकेशन्स : प्रभास प्रकाशन

मानस पब्लिकेशन्स : अस्मिता प्रकाशन

52 तुलाराम बाग, इलाहाबाद - 211006

फोन : 0532-2503080 मोबाइल : 9415347186, 9415763049

ई-मेल : anamikaprakashanallahabad@gmail.com
vachanpublications@gmail.com

उपन्यास

● गीतांजलि (2010)	रवीन्द्रनाथ टैगोर	150.00
● गोदान (2010)	प्रेमचन्द	300.00
● गबन (2010)	प्रेमचन्द	250.00
● सेवासदन (2010)	प्रेमचन्द	250.00
● निर्मला (2010)	प्रेमचन्द	150.00
● प्रतिज्ञा (2010)	प्रेमचन्द	150.00
● कर्मभूमि (2010)	प्रेमचन्द	300.00
● रंगभूमि (2010)	प्रेमचन्द	450.00
● प्रेमाश्रम (2010)	प्रेमचन्द	350.00
● कंकाल (2010)	जय शंकर प्रसाद	100.00
● तितली (2010)	जय शंकर प्रसाद	250.00
● इरावती (2010)	जय शंकर प्रसाद	80.00
● प्रसाद के सम्पूर्ण उपन्यास (2010)	जय शंकर प्रसाद	800.00
● भोला और चंदन (2010)	आशा सिंह	195.00
● बुधुआ की बेटा (2010)	पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र	225.00
● अग्नि स्नान (2010)	प्रीति सुधा मोहांति	300.00
● शहर में कपर्धू	विभूति नारायण राय	150.00
● किस्सा लोकतंत्र	विभूति नारायण राय	150.00
● घर	विभूति नारायण राय	150.00
● बोरीवली से बोरीबन्दर तक	शैलेश मटियानी	150.00
● गाँव-बेगाँव.	राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय	150.00
● उर्मि	महेश चन्द्र द्विवेदी	95.00

कहानी-संग्रह

● उन्मादिनी (2011)	केदारनाथ अग्रवाल	195.00
● फेंस के इधर और उधर (2011)	ज्ञानरंजन	225.00
● नौ साल छोटी फैंस (2011)	रवीन्द्र कालिया	200.00
● तिरिया चरित्त (2011)	शिवमूर्ति	225.00
● आदमी नहीं टूटता (2011)	अखिलेश	225.00
● हाशिये पर धूप (2010)	शशि जैन	195.00
● तुम्हारा नाम क्या है (2009)	शारदा लाल	195.00
● बिखरे फूल (2009)	उमा वर्मा	195.00
● डुंगरी डुंगरी (2009)	अमिताभ मिश्र	150.00
● इसी शहर में (2008)	दीपा त्यागी	200.00
● दस बाल कथाएँ (2009)	अरविन्द कुमार उपाध्याय	150.00
● दूसरे दौर में (2009)	दीपक शर्मा	150.00
● अंदमान निकोबार की लोककथाएँ	लीलाधर मंडलार्ई	95.00
● अजगर और बूढ़ा बर्दई	नीलकांत	150.00
● काफिर तोता	पुत्री सिंह	150.00
● नई इमारत	अजित पुष्कल	95.00
● जलसा	अभय	150.00
● समकालीन श्रेष्ठ कहानियाँ	सं. विद्याधर शुक्ल	150.00
● शेष अशेष	चन्द्रभान भारद्वाज	180.00
● दादी माँ का चौरा	नीरजा द्विवेदी	75.00
● आठवीं लड़की का जन्म	कनकलता	150.00
● सत्यबोध	महेश चन्द्र द्विवेदी	100.00
● समकालीन हिन्दी कहानियाँ भाग-1	सं. रवीन्द्र कालिया	680.00
● समकालीन हिन्दी कहानियाँ भाग-2	विभूति नारायण राय	680.00
● प्रेम पराग	प्रेम बिहारी 'अजमेरी'	250.00
● छोटे लोग	किदारनाथ शर्मा	150.00
● समकालीन हिन्दी कहानियाँ भाग-1	सं. रवीन्द्र कालिया	680.00
● समकालीन हिन्दी कहानियाँ भाग-2	विभूति नारायण राय	680.00
● बन्दर शिवाला के भूत	प्रियदर्शन मालवीय	150.00
● प्रेमचन्द की सम्पूर्ण कहानियाँ दो खण्ड	प्रेमचन्द	2000.00
● मानसरोवर (1 से 8 खण्ड) (2010)	प्रेमचन्द	2000.00
● मानसरोवर (प्रत्येक खण्ड)	प्रेमचन्द	250.00
● आकाश दीप	जय शंकर प्रसाद	60.00
● प्रसाद की सम्पूर्ण कहानियाँ	जय शंकर प्रसाद	800.00

काव्य-संग्रह

● प्यासी पथराई आँखें	नागार्जुन	160.00
● चुनी हुई कविताएँ (2011)	केदारनाथ अग्रवाल	495.00
● छोटे हाथ	केदारनाथ अग्रवाल	20.00
● आदमी की ज़िन्दगी (2011)	फहमीदा रियाज़	150.00
● कपास के अगले मौसम में (2011)	हरिओम	100.00
● भूतग्रस्त	मान बहादुर सिंह	95.00
● माँ जानती है	मान बहादुर सिंह	50.00
● ललमुनियाँ की दनिया	दिनेश कुमार शुक्ल	195.00
● कभी तो खुलें कपाट	दिनेश कुमार शुक्ल	150.00
● नया अनहद	दिनेश कुमार शुक्ल	200.00
● समय चक्र	दिनेश कुमार शुक्ल	200.00
● बेपाँव का सफ़र	राजा दुबे	95.00
● जंगल जहाँ खत्म होता है	ध्रुव नारायण गुप्त	95.00
● अंधड़ में दूब	रविशंकर पाण्डेय	125.00
● अनाज का दाना चुप है	प्रभु नारायण श्रीवास्तव	150.00
● फूटती नदी	राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय	150.00
● इतनी सम्भावनाओं के बाद भी	जया जादवानी	150.00
● बादलों में आग	क्षमा कौल	150.00
● ऐसे नहीं फिर कभी	प्रवीण चन्द्र शर्मा	100.00
● गाँव शान्त है	किशन सिंह अटोरिया	125.00
● धरती मुस्करायेगी	किशन सिंह अटोरिया	150.00
● खोया हुआ व्यक्ति	पी.वी. जगनमोहन	150.00
● समुद्र के तट पर	पी.वी. जगनमोहन	125.00
● वितस्ता का तीसरा किनारा	महाराज कृष्ण संतोषी	150.00
● कागज़ की जमीन पर	रमेश पाण्डेय	150.00
● बेघर हुए अलाव	ओम धीरज	150.00
● महात्मा	बालकृष्ण 'गौतम'	500.00
● वक्त आदमखोर	मधुकर अष्ठाना	150.00
● कामायनी	जय शंकर प्रसाद	250.00
● दुख पतंग (2007)	रंजना जायसवाल	200.00
● आँच पर सवाल (2008)	राजेश कुमार	200.00
● नष्ट वन के अमलतास (2008)	सुमित्र शंकर बनर्जी	150.00
● लोग देख रहे हैं (2009)	राम सेंगर	200.00
● इस आखेटक समय में (2009)	रविशंकर पाण्डेय	250.00

● एक पेड़ की आत्मकथा (2009)	भरत प्रसाद	275.00
● आदमी कहीं नहीं जाता (2010)	दिनेश शंकर शुक्ल	200.00
● मध्यान्तर (2010)	सच्चिदानन्द जोशी	150.00
● गौतम (2010)	योगेश्वर प्रसाद सिंह योगेश	350.00

आत्मकथा/जीवनी/अध्यात्म/व्याकरण

● मेरा जीवन संघर्ष	डॉ. कै. लक्ष्मी सहगल	150.00
● तुम कौन हो	प्रभास कुमार झा	400.00
● कुंभ गाथा	त्रिनाथ मिश्र	150.00
● सत्यमेव जयते	आचार्य छितानी प्रसाद पाण्डेय	150.00
● जाकी जोति बरै दिन राती (अप्राप्य)	भगवती प्रसाद केडिया	300.00
● महायान बौद्ध धर्म के सिद्धांत	शालिनी	195.00
● सबद हमारा साँच का	शैलेन्द्र मणि त्रिपाठी	300.00
● हिन्दी व्याकरण	कामता गुरू	495.00

पर्यावरण/स्वास्थ्य/मानवाधिकार/समाजशास्त्र/पत्रकारिता

● हम और हमारा पर्यावरण	डॉ. रविशंकर पाण्डेय	400.00
● लोक संस्कृति में प्रतिरोध	डॉ. प्रकाश त्रिपाठी	400.00
● उदास चेहरों की दास्ताँ	प्रभात	150.00
● यायावरी	संजय तिवारी	150.00
● कैंसर से कैसे बचें	डॉ. कृष्णा मुकर्जी	150.00
● मानवाधिकार हनन के अमानवीय चेहरे	पी.वी. जगनमोहन	200.00
● खबर लहरिया	सुभाषिणी अली	350.00
● पंचायत और गाँव समाज : पुनर्जागरण की राह	चन्द्रशेखर प्राण	450.00
● समाज कार्य (2009)	डॉ. मनीष द्विवेदी	525.00
● समाज शिक्षा और विकास (2009)	डॉ. शशिकला पाण्डेय	150.00
● पूर्वांचल के गांधी : बाबा राघवदास (2010)	डॉ. आमोदनाथ त्रिपाठी	400.00
● पत्रकारिता परिकथा (2010)	राजनारायण मिश्र	150.00
● प्राथमिक शिक्षा का विकेन्द्रीकृत प्रबन्धन (2011)	डॉ. अजय प्रकाश तिवारी	350.00

नाटक/काव्य नाटक/खण्ड काव्य

● घोड़ा घास नहीं खाता	अजित पुष्कल	(अप्राप्य)
● अपराजिता	पारसनाथ गोवर्द्धन	95.00
● युद्ध के विरुद्ध	रामनारायण रानार्जुन राना	150.00
● प्रसाद के सम्पूर्ण नाटक		600.00
● प्रसाद के सम्पूर्ण एकांकी नाटक		200.00

ग़ज़ल / व्यंग्य / निबन्ध / संस्मरण/पत्र

● धूप का परचम (ग़ज़ल)	हरिओम	150.00
● मौसम के बहाने (ग़ज़ल)	ध्रुव गुप्त	200.00
● तमाशा (ग़ज़ल)	अनिरुद्ध सिनहा	200.00
● रोशनी की बात (ग़ज़ल)	हादी आजमी	200.00
● बज़म-ए-सुखन (ग़ज़ल)	सं.- शैलेन्द्र प्रताप सिंह	350.00
● बज़म-ए-खुमार (ग़ज़ल)	सं.- शैलेन्द्र प्रताप सिंह	350.00
● चेहरा और दर्पण	सन्तोष खरे	150.00
● प्रिये प्रियतम (पति पत्नी के पत्र)	केदारनाथ अग्रवाल	195.00

आलोचना/शोधग्रंथ

● आस्था के कवि: केदारनाथ अग्रवाल (2011) सं. प्रकाश त्रिपाठी		400.00
● हिन्दी साहित्य का इतिहास (2010)	रामचन्द्र शुक्ल	495.00
● कबीर ग्रंथावली (2010)	श्याम सुन्दर दास	495.00
● साहित्यालोचन (2010)	श्याम सुन्दर दास	495.00
● कविता की बात (2011)	केदारनाथ अग्रवाल	195.00
● मार्कण्डेय : परम्परा और विकास (2010) सं. प्रकाश त्रिपाठी		475.00
● जगदीश गुप्त:व्यक्ति और काव्य	प्रकाश त्रिपाठी	150.00
● रहीम की काव्यभाषा	प्रकाश त्रिपाठी	130.00
● लेखन (2010)	डॉ. कमलेश सिंह	200.00
● नागार्जुन और केदारनाथ अग्रवाल के...(2010)देवेश त्रिपाठी		500.00
● आंचलिक हिन्दी उपन्यास (2009)	डॉ. रंजना सिंह	350.00
● हिन्दी आलोचना का वामपक्ष (2010)	डॉ. आशा उपाध्याय	350.00
● हिन्दी भाषा और लिपि का विकास (2010)डॉ. शशिकला त्रिपाठी		195.00
● गंगा से कावेरी तक (2010)	डॉ. पी. वी. जगनमोहन	495.00
● भारतीय भाषाओं के बीच अंतःसम्बन्ध(2010)डॉ. पी. वी. जगनमोहन		495.00
● निर्मल वर्मा की कथा भाषा (2010)	सर्वेश सिंह	350.00
● राहुल सांकृत्यायन:स्वप्न और संघर्ष (2009)सं. जय प्रकाश धूमकेतु		750.00
● राहुल सांकृत्यायनमूल्य और मूल्यांकन (2010)सं. जय प्रकाश धूमकेतु		750.00
● मुक्तिबोध : स्वप्न और संघर्ष (पुरस्कृत)	कृष्णमोहन	150.00
● अज्ञेय की काव्यदृष्टि (2007)	डॉ. परितोष कुमार मणि	350.00
● जिन्दगी में कविता (2007)	प्रभात कुमार उप्रेता	500.00
● लेखन	डॉ. कमलेश सिंह	300.00
● निर्मल वर्मा की कथाभाषा (2011)	डॉ. सर्वेश सिंह	200.00
● नागार्जुन और केदारनाथ अग्रवाल (2011) डॉ. देवेश त्रिपाठी		100.00
● समकालीन कविता और धूमिल	डॉ. मंजुल उपाध्याय	150.00

● कविता की लोक प्रकृति	डॉ. जीवन सिंह	150.00
● कहानी आन्दोलन की भूमिका	डॉ. बलराज पाण्डेय	150.00
● नया नाटक : स्वरूप और संभावनाएँ	चन्द्रशेखर प्राण	150.00
● सौन्दर्य और सौन्दर्यानुभूति	डॉ. विश्वनाथ प्रसाद	150.00
● हिन्दी काव्य गोरखनाथ से केशवदास तक	डॉ. रामदीन मिश्र	60.00
● संत साहित्य की पारिभाषिक शब्दावली	डॉ. शशिकला पाण्डेय	250.00
● धर्मवीर भारती का कथा संसार	डॉ. देवी प्रसाद कुँवर	150.00
● भारतेन्दु हरिश्चन्द्र : नए परिदृश्य	डॉ. भवदेव पाण्डेय	200.00
● विष्णुकांत शास्त्री : सृजन के आयाम	सं. प्रकाश त्रिपाठी	500.00
● मुक्तिबोध का काव्य : जीवन दृष्टि और युगबोध (2011) रेनू सिंह		350.00

OUR PUBLICATIONS IN ENGLISH

● Combating Communal Conflicts	V.N. Rai	495.00
● Chasing the Twilight	P.V. Jaganmohan	250.00
● Freedom Struggle and Police	Dr. Ajai Shankar Pandey	250.00
● Waste Management & Energy Recovery	Dr. Ajai Shankar Pandey	250.00
● India Unleashed: Problems & Prospects	Saumira Mohan	750.00
● Regimes in International Relations (2011)	Saumira Mohan	500.00
● Guy the Next Door	Ravi Kumar	495.00
● Power Sector Reform	P V Jaganmohan	750.00
● Introduction to Counselling	Dr Manish Dwivedi	525.00
● Regimes in international Relations	Saumira Mohan	495.00

हमारे द्वारा प्रकाशित केदारनाथ अग्रवाल की पुस्तकें

● केदार : शेष-अशेष (2011)	नरेन्द्र पुण्डरीक	500.00
● उन्मादिनी (2011)	नरेन्द्र पुण्डरीक	195.00
● प्रिये-प्रियमन (2011)	नरेन्द्र पुण्डरीक	195.00
● कविता की बात (2011)	नरेन्द्र पुण्डरीक	195.00
● चुनी हुई कविताएँ (2011)	नरेन्द्र पुण्डरीक	375.00
● छोटे हाथ	केदारनाथ अग्रवाल	20.00
● आस्था के कवि : केदारनाथ अग्रवाल सं. प्रकाश त्रिपाठी		400.00

प्रकाश त्रिपाठी की प्रकाशित पुस्तकें

● आस्था का कवि : केदारनाथ अग्रवाल (2011)	सं. प्रकाश त्रिपाठी	400.00
● मार्कण्डेय : परम्परा और विकास (2011)	सं. प्रकाश त्रिपाठी	475.00
● विष्णुकांत शास्त्री : सृजन के आयाम	सं. प्रकाश त्रिपाठी	500.00
● लोक संस्कृति में प्रतिरोध (2006)	सं. प्रकाश त्रिपाठी	400.00

● जगदीश गुप्त : व्यक्ति और काव्य (2010)	सं. प्रकाश त्रिपाठी	150.00
● केदार सम्मान के कवि (2010)	सं. प्रकाश त्रिपाठी	180.00
● रहीम की काव्यभाषा (2010)	प्रकाश त्रिपाठी	150.00

अच्छी पुस्तकें पाठकों के घर

चुनिये इनमें से कोई भी 10 पुस्तकें मात्र रु. 1000.00 में

● प्यासी पथराई आँखें	नागार्जुन	160.00
● भूतग्रस्त	मान बहादुर सिंह	195.00
● आदमी की जिन्दगी (2011)	फहमीदा रियाज़	200.00
● कपास के अगले मौसम में (2011)	हरिओम	100.00
● कविता की बात (2011)	केदारनाथ अग्रवाल	195.00
● ललमुनियाँ की दनिया	दिनेश कुमार शुक्ल	195.00
● कभी तो खुलें कपाट	दिनेश कुमार शुक्ल	150.00
● नया अनहद	दिनेश कुमार शुक्ल	200.00
● समय चक्र	दिनेश कुमार शुक्ल	200.00
● बेपाँव का सफर	राजा दुबे	195.00
● जंगल जहाँ खत्म होता है	ध्रुव नारायण गुप्त	195.00
● अंधड़ में दूब	रविशंकर पाण्डेय	125.00
● कविता की लोक प्रकृति	डॉ. जीवन सिंह	150.00
● वितस्ता का तीसरा किनारा	महाराज कृष्ण संतोषी	150.00
● दुख पतंग (2007)	रंजना जायसवाल	200.00
● एक पेड़ की आत्मकथा (2009)	भरत प्रसाद	275.00
● उन्मादिनी (2011)	केदारनाथ अग्रवाल	195.00
● प्रिये-प्रियमन (2011)	केदारनाथ अग्रवाल	195.00
● धूप का परचम (गज़ल)	हरिओम	150.00
● मौसम के बहाने (गज़ल)	ध्रुव गुप्त	200.00
● तमाशा (गज़ल)	अनिरुद्ध सिनहा	200.00
● रोशनी की बात (गज़ल)	हादी आजमी	200.00

उपर्युक्त सूची में से चुनिये अपनी पसन्द की कोई भी 10 पुस्तकें और इन्हें रु. एक हजार के बैंकड्राफ्ट के साथ हमें भेज दीजिये। हम आपको रजि. बुक पैकेट से पुस्तकें भेज देंगे और डाक व्यय भी हमीं देंगे।

अनामिका प्रकाशन, 52 तुलाराम बाग, इलाहाबाद - 211006

फोन : 0532-2503080 मोबाइल : 9415347186, 9415763049

ई-मेल : anamikaprakashanallahabad@gmail.com

vinodshukla185@gmail.com

